RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | Iss.09 | September 2021 | pp. 137-140
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

जम्मू संभाग में शांति की चुनौतियाँ

रोहित शर्मा

पी-एचडी शोध छात्र- गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Abstract

शांति वर्तमान समय की सबसे जरूरी व महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। विश्व पटल पर कई ऐसी घटनाएँ हमारे इर्द-गिर्द घटित हो रही हैं जिनका सीधा प्रभाव व्यक्ति, समाज व किसी राष्ट्र की शांति व जीवन पर पड़ता है और शांति के लिए चुनौतियाँ भी उत्पन्न होती है। कई वैश्विक समस्या अथवा संघर्ष की घटनाएँ हमारे सामने हैं जिनमें दो-दो विश्वयुद्ध हैं फिर शीतयुद्ध का दौर उसके बाद आतंकवाद का प्रकट होना। इन सबसे सीधा प्रभाव शांति पर पड़ता है। जम्मू व कश्मीर भारत के विभाजन के समय से ही शांति की चुनौतियों से झूझ रहा है जिसका कारण पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद, सीजफायर का निरंतर उल्लंघन व पाकिस्तानी कूटनीतिक चालें आदि कई सामस्याओं से शांति के लिए चुनौतियाँ देखने को मिलती है। इसका सीधा प्रभाव जम्मू संभाग के विकास व स्थानीय शांति पर भी पड़ता दिखता है और यह एक घंभीर समस्या है।

Keywords: *शांति, चुनौतियाँ, सीजफायर, आतंकवाद।*

Article Publication

Published Online: 15-Sep-2021

***Author's Correspondence**

रोहित शर्मा

पी-एचडी शोध छात्र- गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

rohitsadotrasharma[at]gmail.com

10.31305/rrijm.2021.v06.i09.022

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

जम्मू संभाग में शांति की चुनौतियाँ:

वैश्विक स्तर पर आज शांति की आवश्यकता को अहम समझा जा रहा है। आतंकवाद, सीमा-विवाद, सामाजिक-शांति, घरेलू-अंतरराष्ट्रीय संघर्ष आदि के रूप में आज विश्व का लगभग हर राष्ट्र किसी-न-किसी समस्या से जूझ रहा है। इसी कारण वर्तमान समय में शांति का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति और समाज में सामंजस्य बनाने में भी कहीं-न-कहीं शांति एक एहम भूमिका निभाती है और जब शांति प्रभावित होती है तो निश्चित तौर पर कहीं-न-कहीं जीवन पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ता है। वैश्विक शांति सूचकांक 2020 में भारत का स्थान 139वा है जो कि बहुत संतोषजनक स्थान नहीं है। प्राचीन काल में भारतवर्ष को पूरे विश्व में शांति और स्मृधी के प्रतीक के रूप में देखा जाता था अथवा विश्वगुरु भी कहा जा सकता था। वैश्विक शांति सूचकांक वैश्विक स्तर पर किसी राष्ट्र में शांति की स्थिति को दर्शाता है जिसे हर वर्ष किसी राष्ट्र में शांति की स्थिति को देखते हुए संपादित किया जाता है। भारत में जम्मू व कश्मीर प्रदेश को शांति की चुनौतियों से जूझता हुए एक प्रदेश के रूप में देख सकते हैं जिसके पीछे पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान व चीन की गहरी कूटनीति व लगातार सीमाओं पर गोलीबारी व आतंकवाद को बढ़ावा देना मुख्य कारण माना जा सकता है। जिनमें सीजफायर उल्लंघन (सीमा उल्लंघन), आतंकवादी घटनाएँ, उग्रवादी प्रदर्शन, आदि मुख्य हैं। जम्मू संभाग को शांति के दृष्टिकोण से देखें तो वर्तमान समय में इस पूरे संभाग के एक बड़े क्षेत्र की सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है जिसमें कठुआ से अंतरराष्ट्रीय सीमा क्षेत्र शुरू होता है और पुंछ मेंडर तक नियंत्रण रेखा/सीमा लगती है। यह पूरा क्षेत्र समय-समय पर अशांति की स्थिति को झेलता रहता है। दूसरी तरफ हिमाचल प्रदेश व पंजाब राज्य की सीमाएं भी जम्मू संभाग से लगती हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो इस पूरे संभाग का अपना एक राजनैतिक व भोगौलीक दृष्टिकोण से भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। जिसमें

जम्मू संभाग की पाकिस्तान से लगने वाली अंतरराष्ट्रीय सीमा क्षेत्र में मैदानी क्षेत्र अधिक हैं तो नियंत्रण रेखा/सीमा का अधिकतम क्षेत्र दुर्गम व पहाड़ी है। इस पूरे क्षेत्र (अन्तर्राष्ट्रिय सीमा क्षेत्र एवं नियंत्रण रेखा/सीमा क्षेत्र) में पाकिस्तान की तरफ से संभाग की शांति समय-समय पर प्रभावित होती रहती हैं जिसका प्रभाव पूरे जम्मू संभाग की शांति व जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है।

जम्मू व कश्मीर में शांति की चुनौतियों को देखें या अध्ययन किया जाए तो प्राचीन काल से इस पूरे क्षेत्र की स्थिति जिसमें विशेष रूप से शांति की अवधारणा और शासन को समझना हो तो "इतिहासश्रिय रचना का श्रेष्ठ उदाहरण अवश्य ही कल्हण-रचित *राजतरंगिणी* है। यह कश्मीर का इतिहास है जिसे बारहवीं शताब्दी में लिखा गया था। सप्तम शताब्दी से पूर्वकी परिस्थितियों का वर्णन करने में कल्हण अनेक स्थलों में तथ्य की अपेकषा काल्पनिक कथा, अतिशयोक्ति और जनश्रुति के ऊपर अधिक निर्भर रहें हैं। अष्टम शताब्दी से आँका अध्ययन तथ्यों पर आश्रित है। उनका ग्रंथ ही कश्मीर का इतिहास जानने का मुख्य स्रोत है"। यहाँ जनश्रुति व तथ्यों दोनों के आधार पर लिखा प्राचीन इतिहास श्रेणीबद्ध रूप से उपलब्ध है जिसमें ललितादित्य, जौनराजा आदि के समय के शांतिमय व स्मृद्ध इतिहास का वर्णन मिलता है। यहाँ राजतरंगिणी के आधार पर कश्मीर का नाम कश्यप मुनि से काश्यपमार या बाद में काश्मीर हुआ वहीं जम्मू का नाम राजा जंबूलोचन के नाम से जम्बूद्वीप जम्बू नागरी फिर धीरे-धीरे जम्मू नाम हुआ जिसे स्थानीय लोग डुग्गर प्रदेश (डोगरी भाषाई प्रदेश) भी कहते हैं।

जम्मू व कश्मीर में अशांति की समस्या का उदय तो भारत के विभाजन के समय ही उत्पन्न हो गया था जिसका मुख्य कारण जम्मू व कश्मीर के विलय के समय की कबायली घटना और राज्य में अशांति थी। पाकिस्तान कूटनीति के साथ जम्मू व कश्मीर को अपने डॉमिनियन में मिलाना चाहता था लेकिन उस समय जम्मू व कश्मीर के महाराजा ने रियासत पर हुए अचानक कबायली हमले के कारण भारत से सहायता लेने के लिए भारत के साथ विलय कर लिया जिसके मुख्य कारण कबयलियों से रियासत को बचना था। भारत एवं पाकिस्तान के मध्य पहला युद्ध हुआ जिसका भारतीय पक्ष राज्य की रक्षा करना व दूसरा पाकिस्तान का पक्ष जम्मू व कश्मीर पर जबरन अधिकार करना था। भारत-पाक के मध्य युद्ध की समाप्ती के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने युद्ध-विराम की घोषणा की थी जिसके बाद युद्ध समाप्त हुआ और इस युद्ध के बाद जो सेना जिस क्षेत्र में थी उसी क्षेत्र को उस राष्ट्र का नियंत्रित क्षेत्र मान लिया गया और आज की समस्या उसी नियंत्रण की लड़ाई है। जिसे पाकिस्तान ने 1965 के युद्ध, 1971 के युद्ध, 1999 के युद्ध व 2012 से 2021 तक लगातार बढ़ते सीजफायर के उल्लंघन व सीमा पार से आतंकवादी घटनाओं के माध्यम से जारी रखा हुआ है। भारत एवं पाकिस्तान के मध्य युद्धों के अलावा सीमा पर तनाव की स्थिति हमेशा बनी रहती है जिसका कारण है पाकिस्तान द्वारा सीमा पर गोलीबारी करना। यह कहना गलत नहीं होगा कि पाकिस्तान द्वारा जम्मू व कश्मीर के सीमा क्षेत्रों पर आतंकी घुसपैठ करवाने के लिए गोलीबारी करता है क्योंकि जम्मू व कश्मीर की सीमाओं पर कई बार आतंकी घटनाएँ देखने को मिलती रहीं हैं व साथ ही जम्मू क्षेत्र की सीमाओं पर कई बार सुरंग भी पायी जाती है जिससे क्षेत्र में शांति के लिए चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो जाती हैं। हाल ही के वर्षों में आतंकवाद की घटनाओं से कश्मीर घाटी के साथ-साथ जम्मू संभाग की शांति के लिए भी चुनौतियाँ उत्पन्न हुई है।

सीजफायर उल्लंघन व आतंकवाद जम्मू संभाग में शांति को प्रभावित करने वाले दो सबसे बड़े कारक के रूप में हैं और कहीं-न-कहीं दोनों ही परस्पर आपस में जुड़े हुए भी हैं। सीमा क्षेत्र में सीजफायर उल्लंघन और उसकी आड़ में आतंकवादी गुसपैठ एक बहुत ही जटिल समस्या के तौर पर है। जिससे स्थानीय शांति व जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जम्मू व कश्मीर में आतंकवाद की शुरुआत "सन 1964 में मोहम्मद मकबूल भट्ट के नेतृत्त्व में जम्मू एण्ड कश्मीर लिब्रेशन फ्रंट संगठन की स्थापना पेशावर में की गयी। इस संगठन की स्थापना के पश्चात मोहम्मद मकबूल भट्ट को मृत्युदंड की सजा दे दी गयी। 1971 में इस तांजिम को जेकेएलएफ़ नाम दिया गया" इस सबमें पाकिस्तानी गुफिया एजेंसी आईएसआई की गहरी कूटनीति भारत में अशांति का माहौल बनाना जिसमें विषेशरूप से जम्मू व कश्मीर की शांति व जीवन को प्रभावित करना लक्ष्य था जो कि आज भी है। 1990 के दशक से लेकर समूचा जम्मू व कश्मीर आतंकवाद व सीमा पार की गोलीबारी से प्रभावित रहा है जिससे पूरे राज्य की शांति और इस क्षेत्र के विकास पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

आतंकवाद के अलावा वर्तमान समय में पूरे जम्मू व कश्मीर राज्य या विशेषकर जम्मू संभाग में शांति और स्थानीय जीवन पर प्रभाव को देखें तो भारत एवं पाकिस्तान के मध्य नये तरह के तनाव या अघोषित युद्ध की स्थिति 2010 से लेकर निरंतर सीज़फायर उल्लंघन (धीमी गति का

युद्ध) के रूप में सामने आयी है। सीजफायर उल्लंघन और सीमापार से आतंकी गुसपैठ आपस में परस्पर जुड़े हुए हैं क्योंकि बड़ी कूटनीति के साथ आतंकवादियों को सीमापार करवाने के लिए सीजफायर का उल्लंघन कर सीमा क्षेत्र में गोलीबारी की जाती है। आतंकवादी घटनाओं में "30 अक्तूबर 2001 में जम्मू व कश्मीर विधानसभा पर आतंकी हमला" व 14 मई 2002 का जम्मू के सैन्य पारिवारिक आवास पर आतंकी हमला मुख्य है। जिसमें 47 लोग गंभीर रूप से घायल हुए और इस आतंकी कारवाई में 34 लोगों नें अपने प्राण गवाये। जिनमें ज़्यादातर सैन्यकर्मियों की पत्नियाँ एवं छोट्टे बच्चे थे और साथ ही कुछ स्थानीय लोग भी मारे गये व घायल हुए। इसके अलावा कई अन्य आतंकवादी हमले हुए जिनमें जम्मू के रघुनाथ मंदिर पर आतंकी हमला, चिन्नोर का आतंकी हमला, सांबा का आतंकी हमला व अन्य कई आतंकवादी हमले संभाग में समय-समय पर हुए जिससे स्थानीय शांति व जनजीवन प्रभावित हुआ। वर्ष 2016 के जुलाई माह में आतंकी बुरहान बानी के मुठभेड़ में मारे जाने के बाद राज्य में अशांति का माहोल रहा जिसका प्रभाव जम्मू संभाग पर भी पड़ा। जिससे व्यापार व पर्यटन को तो असर हुआ ही स्थानीय जीवन भी प्रभावित रहा। जम्मू व कश्मीर में आतंकी घटनाएँ आम तौर पर आए दिनों होती ही रहती हैं जिससे भी देश व राज्य की शांति प्रभावित होती है। जम्मू व कश्मीर के उड़ी सैक्टर का आतंकवादी हमला व पुलवामा का आतंकवादी हमला बड़ी घटनाओं के रूप में जिससे पूरे देश में आक्रोश, अशांति व भय की स्थिति कहीं-न-कहीं व्याप्त हो रही थी और निश्चित तौर पर जम्मू संभाग व राष्ट्र की शांति पर इसका प्रभाव रहा। उड़ी के आतंकवादी हमले के बाद की एक महत्वपूर्ण घटना भारत की तरफ से सर्जिकल स्ट्राइक की घटना के रूप में है जिसके विषय में "भारत के डीजीएमओ लेफ्टिनेंट जनरल रनबीर सिंह नें गुरुवार दोपहर 12 बजे एक प्रेस कांफ्रेंस में 'भारतीय सेना के लाइन ऑफ कंट्रोल पर सर्जिकल स्ट्राइक कर आतंकवादी ठिकाने नष्ट करने का दावा किया" जो कि पाक-अधिकृत जम्मू व कश्मीर में आतंकवादी लांच पैड्स नष्ट कर पठानकोट हमले व उड़ी सेक्टर के आतंकवादी हमले के बदले के रूप में भी देखा जा सकता है जिससे सेना व सरकार के प्रति स्थानीय शांति को बनाये रखने के लिए कार्य के रूप में भी देखा जा सकता है। लेकिन इस स्ट्राइक के बाद दोनों राष्ट्रों के मध्य तनाव की स्थिति बन गयी और जिसका परिणाम सीमा क्षेत्र पर सीज़फायर उल्लंघन के रूप में देखा गया। एक अन्य घटना जिसमें जनवरी 2018 को कठुआ के हीरानगर तहसील के गाँव रसाना में आठ वर्षीय बच्ची आसिफा बानों की निर्मम हत्या एवं बलात्कार से क्षेत्र में तनाव व अशांति का माहौल बन गया और पूरे देश में आक्रोश की स्थिति उत्पन्न हो गयी। इसी संदर्भ में जम्मू बंद रहा और एक विशाल जन आंदोलन हुआ जिसमें स्थानीय लोगों द्वारा रोहिंग्या विस्थापितों की जम्मू से वापसी व आसिफा की हत्या व बलात्कार केस की जांच सीबीआई से करवाने की मांग सरकार से की जिससे उस पूरे आंदोलन में जम्मू संभाग की शांति व जनजीवन प्रभावित हुए। जम्मू संभाग में अशांति के बीच एक अन्य घटना हुई जिसमें "जम्मू के सूजवां में सैन्य शिविर पर शनिवार (10 फरवरी,2018) तड़के सुबह आतंकवादियों नें हमला बोल दिया जिसमें दो सैनिक शहीद हो गए। शिविर में घुसे आतंकवादियों नें फॅमिली क्वार्टर्स में दाखिल होकर सो रहे लोगों पर गोलीबारी शुरू कर दी"। जम्मू शहर के सुंजवान के आर्मी केम्प पर आतंकी हमला होना जिसमें 10 लोगों के गंभीर रूप से घायल होने के साथ ही सेना के 5 जवान शहीद होने जिनमें 4 जवान जम्मू संभाग के ही स्थानीय नागरिक थे इसके साथ ही 1 अन्य स्थानीय नागरिक भी इस हमले में मारा गया। सेना की जवाबी कारवाई में 4 आतंकियों को ढेर कर दिया गया जिनकी पुष्टि सेना ने पाकिस्तानी नागरिकों के रूप में की थी। इस हमले की ज़िम्मेदारी पाकिस्तान के आतंकी संगठन लश्कर-ए-तयबा ने ली थी जिसे पाकिस्तान के द्वारा जम्मू संभाग की शांति भंग करने व स्थानीय जनता में भय की स्थिति बनाने के रूप में हम देख सकते हैं। वर्ष 2010 से बनी सीजफायर उल्लंघन की समस्या भी एक विकराल समस्या के रूप में है जिसमें वर्ष 2014 में 555 से अधिक बार सीमा क्षेत्र में गोली चली और वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के समय में भी पाकिस्तानी फायरिंग सीमा क्षेत्र के लोगों के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में है। इसके पीछे के वर्षों को देखें तो वर्ष 2018 के मई माह तक पाकिस्तान के द्वारा जम्मू संभाग में 747 बार सीजफायर का उल्लंघन कर सीमा क्षेत्र पर गोली चलाई गयी जिसमें दर्जनों लोगों के जान और माल की हानि के साथ कुल 76 हज़ार लोगों ने अपने गाँव खाली कर दिये जिससे 100 से अधिक गाँव सुनसान पड़ गए जिससे जम्मू संभाग के स्थानीय जीवन व शांति पर गहरा प्रभाव देखने को मिला।

निष्कर्ष:

जम्मू व कश्मीर में शांति से ही विकास को बढ़ावा मिल सकता है। शोध के इन सभी पहलुओं को देखें तो जम्मू व कश्मीर राज्य के जम्मू संभाग की शांति भारत के विभाजन के समय से ही प्रभावित रही हैं। जिससे पूरे जम्मू व कश्मीर राज्य में शांति के लिए चुनौतियों उत्पन्न हुई

ही साथ-ही-साथ स्थानीय जीवन भी पूरी तरह से प्रभावित होता रहा है। जबकि प्राचीन काल में यह समूचा क्षेत्र एक स्मृध व शांतिमय क्षेत्र के रूप में था। भविष्य में स्थानीय जीवन व क्षेत्र के विकास के लिए शांति एक महत्वपूर्ण बिन्दु है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

चक्रवर्ती, रणवीर.(2017) 'भारतीय इतिहास का आदिकाल'. ओरियंट ब्लैकस्वान. हैदरवाद. पृ 18.

मिश्रा, डॉ. वि. कु,. एवं पाण्डेय, डॉ. आशुतोष.(2012). 'भारत और आतंकवाद'. विश्वभारती पब्लिकेशन्स. नई दिल्ली. पृ. 106.

श्रीवास्तव, सी. पी. नेने, शंकर. (2005). 'राजनीति में सत्यनिष्ठ जीवन, लाल बहादुर शास्त्री'. नरेंद्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा॰ लि॰ दिल्ली. पृ 123

https://www.bbc.com/hindi/india-37507085

https://www.jansatta.com/rajya/jammu-kashmir/srinagar/former-jammu-and-kashmir-chief-minister-farooq-abdullah-said-india-pakistan-can-resolve-problem-by-dialogue/569267/